ग्रामीण क्षेत्र में कृषि एवं खादी आधारित उद्यमिता के विकास की संभावनाएँः एक अध्ययन

* वंदना कुमारी
शोधार्थी
गृह विज्ञान विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार
** डा० रेखा झा
सहायक प्राचार्य
गृह विज्ञान विभाग
नागेन्द्र झा महिला महाविद्यालय, दरभंगा

सार –संक्षेप

भारत गाँवों का देश है। यहां की 70 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या गांवों में निवास करती है। स्वतंत्रता पाने के 77 वर्ष पश्चात भी हमारे अधिकांश गांवों में बुनियादी सुविधाओं का अभाव है। इसी कारण से युवाओं में ग्रामीण क्षेत्र से शहरों की ओर पलायन की प्रकृति बढ़ती जा रही है। गाँवों के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है कि सामाजिक एवं आर्थिक दोनों क्षेत्रों में पर्याप्त विकास हो। ग्रामीण सामाजिक एवं आर्थिक विकास के लिए आधारभूत संरचनाओं का विकास करना होगा। इसके लिए ग्रामीण क्षेत्र में उद्यमीय स्थिति का विकास करना अति आवश्यक है। उद्यम विकास की एक ऐसी प्रक्रिया है जो किसी भी अर्थव्यवस्था के अवरोधों को समाप्त कर यहां की आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति को निरंतर बढ़ाती है।

वर्तमान युग में आर्थिक विकास के किसी भी क्षेत्र, अथवा कार्यक्रम में उद्यमिता के महत्व को नकारा नहीं जा सकता है। कुछ व्यक्ति तो आर्थिक विकास का अर्थ ही उद्यमिता से लगाते हैं। उद्यमिता रोजगार में वृद्धि के दृष्टिकोण से भी अहम भूमिका निभा रहा है। आर्थिक रूप से पिछड़े देशों में कृषि पर जनसंख्या का भार अधिक होता है। अतः उद्यमशीलता के फलस्वरूप जब नये–नये उद्यम विकसित होते है तो बहुत से लोग इन उद्यमों में काम करना प्रारम्भ करते हैं। इससे एक ओर तो रोजगार में वृद्धि होती है, दूसरी ओर कृषि पर से जनसंख्या के भार में कमी आती है और कृषि क्षेत्र में प्रति व्यक्ति उत्पादकता में वृद्धि होती है। इस तरह, ग्रामीण आर्थिक विकास में उद्यमिता का बहुत अधिक महत्व है। उद्यमिता समय की मांग है जिसे पूरा किए बिना प्रगति की दौड़ में आगे बढ़ना असम्भव है। प्रस्तुत आलेख ग्रामीण क्षेत्र में कृषि एवं खादी आधारित उद्यमिता के विकास की संभावनाओं को सामने लाने का एक प्रयास है।

भूमिका

उद्यमशीलता एक अत्यन्त जटिल एवं लम्बी प्रक्रिया है। कोई देश पिछड़ी एवं परम्परागत उद्यमीय अवस्था से विकसित अवस्था तक अनायास अथवा एकसाथ ही नहीं पहुंच जाता है। प्रत्येक राष्ट्र को उन्नत

उद्यमिता की अवस्था तक पहुंचने के लिए अनेक अवस्थाओं से गुजरना पडता है। उद्यमिता विकास एक सतत् प्रक्रिया है इसलिए अवस्था एवं प्रक्रिया संबंधी वर्गीकरण करना न तो सम्भव है न ही उचित। विकास की ये अवस्थाएं एक दूसरे से परस्पर इस प्रकार सम्बद्ध हैं कि उनका विभाजन एक जटिल समस्या है। विभिन्न देशों में उन्नत उद्यमिता तक पहुंचने की प्रक्रिया में एकरूपता नहीं है। ऐतिहासिक दृष्टि के आधार पर उद्यमिता की प्रक्रिया को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है–

I. **प्रथम अवस्था–** उद्यमिता विकास की इस अवस्था में देश में उपलब्ध प्राकृतिक साधनों का प्रयोग करके उत्पादन कार्य किया जाता है। इस अवस्था में कृषि, पशु पालन, तेल निकालना, खनन, सूत कातना, चमड़ा तैयार करना धातुओं को गलाना इत्यादि क्रियाएं आती हैं।

II. **द्वितीय अवस्था–** उद्यमिता विकास की दूसरी अवस्था में ऐसे उद्यम पनपने लगते हैं जो प्राथमिक उत्पादनों का रूपान्तर करके नवीन वस्तुओं का निर्माण करते हैं। इसमें धातु उद्योग, उपभोक्ता उद्योग होते हैं जो वस्त्र, कागज, फर्नीचर आदि का निर्माण करते हैं। इस अवस्था में आर्थिक विकास के लिए राष्ट्रीय साधनों के अतिरिक्त विदेशी साधनों जैसे कच्चा माल और पूंजीगत वस्तुओं का सहयोग भी लिया जाता है।

III. **तृतीय अवस्था–** उद्यमिता की इस अवस्था में पूंजीगत वस्तुओं मशीन, इंजीनियरिंग, यातायात, बैंकिंग का विकास होने लगता है ताकि वस्तुओं एवं सेवाओं का सृजन किया जा सके जो अन्य उत्पादनों में वृद्धि करने में सहयोग कर सकें। यह अवस्था उद्यमिता की प्रक्रिया को तीव्र करने की आधारशिला है। इस अवस्था में राष्ट्रीय उद्योग काफी विकसित हो चुके होते हैं और अनेक उद्यम परिपक्वता की स्थिति को प्राप्त कर लेते हैं। बाजारों का विस्तार होने के कारण राष्ट्रीय आय में एक बहुत बड़ा भाग विदेशी व्यापार से प्राप्त होने लगता है।

भारत गांवों का देश है। महात्मा गांधी ने कहा था कि भारत की आत्मा गांवों में निवास करती है। यहां की 70 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में निवास करती है। गांव शब्द आते ही दिमाग में एक ऐसे क्षेत्र की छवि अंकित होती है जहां की आबादी सड़क, बिजली, पानी, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि मूलभूत सुविधाओं से वंचित है। आज भी ऐसे बहुत सारे गांव हैं जहां इस तरह की बुनियादी सुविधाओं का अभाव है जिसके कारण ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर पलायन की प्रवृत्ति निरन्तर बढ़ती जा रही है। ग्रामीण जनसंख्या का एक बहुत बड़ा भाग रोजगार के लिए कृषि पर तथा कृषि आधारित उद्योगों पर प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से निर्भर है। भारत में आज भी कृषि 70 प्रतिशत लोगों को रोजगार उपलब्ध कराती है। कृषि उद्यमों के

लिए कच्चा माल उपलब्ध कराती है। कृषि आधारित उद्यम हमारी अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण अंग हैं जिनकी कभी भी उपेक्षा नहीं की जा सकती है। भारत में प्रत्यक्ष रूप से कृषि पर आधारित उद्यमों में सूती वस्त्र उद्यम, पटसन वस्त्र उद्यम, चीनी उद्यम, वनस्पति तथा बागान उद्यम आदि शामिल हैं। हथकरघा, बुनाई, तेल निकालना, चावल कूटना अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर आधारित उद्योग हैं। सम्पूर्ण खाद्य प्रसंस्करण उद्यम का विकास भी कृषि पर निर्भर करता है। फल, सब्जी प्रशोधन, अनाज व दाल उद्यम, पशु पालन, मछली पालन, दुग्ध उद्यम कृषि आधारित कुछ अन्य उद्यम हैं। पिछले 60–70 वर्षों में कृषि, पशु पालन, दुग्ध, फल–सब्जी, के उत्पादन में भारत ने आश्चर्यजनक प्रगति की है।

कृषि आधारित लघु उद्यमों की संभावनाएँ

कृषि आधारित लघु उद्यमों में रोजगार की सम्भावनाओं को खोजा जाए तथा बढ़ावा दिया जाए, तो उद्यम विकास गति पाता है। कुछ कृषि आधारित उद्यमों का विवरण निम्नवत् है–

- **फलों एवं सब्जियों पर आधारित व्यवसाय** – अन्य पोषक पदार्थों की भांति फलों एवं सब्जियों का दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। इनके द्वारा हमें विभिन्न प्रकार के विटामिन, प्रोटीन, खनिज तत्व, कार्बोहाइड्रेटस, वसा, लवण एवं अमीनों अम्ल प्राप्त होते हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार मनुष्य को प्रतिदिन 50–60 ग्राम फल तथा 300 ग्राम सब्जियों का सेवन अवश्य करना चाहिए। फलों व सब्जियों का एक बहुत बड़ा भाग प्रसंस्करण व सरंक्षण एवं उचित भण्डारण की कमी के कारण नष्ट हो जाता है। अतः फलों एवं सब्जियों का सही संरक्षण एवं वैज्ञानिक प्रसंस्करण करके उसे राष्ट्रीय एवं विदेशी बाजारों में बेचकर ग्रामीण युवक घर बैठे ही अच्छी आय प्राप्त कर सकता है। इस कार्य को यदि सहकारिता के आधार पर समूह अथवा स्वयं सहायता समूह बना कर किया जाए तो बैंक भी इसमें आर्थिक सहायता प्रदान करते हैं।

  आजकल प्रचलित सब्जियों के अतिरिक्त कई नयी तरह की सब्जियां बाजारों में दिखाई देती हैं जिनका मूल्य अन्य सब्जियों की तुलना में अधिक होता है इनमें ब्रोकली, चाईनीज पत्ता गोभी, बंद गोभी, लाल पत्ता गोभी, विभिन्न रंगों वाली शिमला मिर्च तथा हाईब्रिड टमाटर प्रमुख हैं। इनकी मांग घरेलू बाजारों में ही नहीं अपितु विदेशी बाजारों में भी बहुत है।
- **बीज उत्पादन व्यवसाय** – बीज खेती–बाड़ी के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है और पैदावार बढ़ाने के लिए इसकी भूमिका अहम होती है। केन्द्र सरकार ने इस सन्दर्भ में कृषि उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए बीजों के महत्व को महसूस करते हुए राष्ट्रीय बीज निगम और भारतीय राज्य फार्म निगम की स्थापना की थी। इसका उद्देश्य विभिन्न फसलों के प्रमाणित

बीजों का उत्पादन एवं वितरण में सुधार करना था। सम्प्रति बीजों के उत्पादन के चार प्रकार होते हैं जिन्हें प्रजनक बीज, आधार बीज, पंजीकृत बीज तथा प्रमाणित बीज के रूप में जाना जाता है।

आज देश में लगभग मिलियन टन से भी अधिक उपयुक्त बीज की आवश्यकता है। परन्तु इसके दसवें भाग का बीज नहीं बन पा रहा है। किसान बीज की जगह अपने घर के अनाज की बुआई करता है। ऐसी परिस्थिति में यदि गांव के पढ़े–लिखे युवक अपना समूह बनाकर जमीन को लीज पर लेकर सामूहिक बीज बनाने का कार्य करें तो शुद्ध एवं उपयुक्त प्रजातियां किसानों को उपलब्ध हो जाएंगी साथ ही ग्रामीण युवकों को घर बैठे आकर्षक रोजगार एवं अच्छी आय प्राप्त हो जायेगी।

- **दुग्ध उत्पादन से जुड़े व्यवसाय–** भारत में पशुपालन कृषि का आवश्यक महत्वपूर्ण अंग है। सम्पूर्ण विश्व में भारत में पशुओं की संख्या सर्वाधिक है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में इसकी प्रमुख भूमिका है। पशुपालन में मांस, दूध तथा प्रोटीन की प्राप्ति होती है। दुग्ध उत्पादन में भारत का प्रथम स्थान है। श्वेत क्रांति से देश में दुग्ध उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। परन्तु राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिव्यक्ति दुग्ध उपलब्धता मात्र 226 ग्राम है।

  इस संबंध में गुजरात की दुग्ध डेयरी अमूल के सिद्धान्त पर यदि गांव के युवा दुग्ध उत्पादन का व्यवसाय करें तो इससे हजारों ग्रामीणों को न सिर्फ घर बैठे–बैठे रोजगार प्राप्त होगा अपितु इससे अच्छी आय भी प्राप्त होगी। इसके लिए गांव में सहकारी समूह बनाकर उत्पादन से लेकर वितरण तक सभी कार्य समूह के सदस्यों द्वारा किया जाए। जिससे बिचौलियों को कोई लाभ न हो सके। इसी प्रकार दूध के पृथक–पृथक उत्पाद बनाकर किसान युवक अच्छा लाभ कमा सकते हैं।

- **पशुपालन पर आधारित व्यवसाय –** पशुओं के दूध के अतिरिक्त उनका गोबर किसान को अच्छी आय पैदा करने में सहायता करता है। गोबर से वर्मीकम्पोस्ट बनाकर किसान अच्छी खासी आय प्राप्त कर सकता है। एक गड्डे से तीन माह में 9 टन खाद प्राप्त की जा सकती है। जिसका आयतन 12×5×3 घन फूट का होता है। इस तरह के एक गड्ढे से प्रतिवर्ष लगभग 25 से 27 टन खाद प्राप्त की जा सकती है। इस प्रकार 20 पशुओं वाली एक डेयरी में ऐसे 20 गड्ढे तैयार किए जा सकते हैं और इस प्रकार एक वर्ष में 500 टन खाद तैयार की जा सकती है जिसका मूल्य 5–7 लाख रुपये होता है। वर्मीकम्पोस्ट के अतिरिक्त अन्य खादें जैसे नैफेड की खाद भी बडे पैमाने पर गोबर की कम मात्रा से बनाकर उसे बेचकर अच्छी आय प्राप्त की जा सकती है। इसी प्रकार रासायनिक कीटनाशी

दवाओं के स्थान पर गो मूत्र तथा नीम के प्रयोग से जैव कीटनाशी बनाकर उसका प्रयोग किया जाए तो समस्त पदार्थो का मूल्य रासायनिक खेती से प्राप्त उत्पादों की तुलना में दुगुना–तिगुना हो सकता है।

- **कुक्कुट व मधुमक्खी पालन से जुड़ा व्यवसाय –** कुक्कुट व मधुमक्खी पालन कृषि के साथ–साथ किया जाने वाला प्रमुख व्यवसाय है। यह उद्यम किसानों की आर्थिक स्थिति को मजबूत करता है। इस उद्यम में कम समय और कम व्यय में अधिक आय प्राप्त की जा सकती है। मांस के लिए जानवर पालने की तुलना में कुक्कुट पालन में कम व्यय होता है। कुक्कुट का एक किग्रा मांस उत्पादित करने के लिए 2.5 किग्रा अनाज की आवश्यकता होती है जबकि एक किग्रा सूअर का मांस उत्पादित करने के लिए 4 किग्रा अनाज की आवश्यकता होती है। मुर्गी का अण्डा भी प्रोटीन का अच्छा स्रोत माना जाता है। भारत में प्रति वर्ष प्रति व्यक्ति अण्डे की खपत 21 है वहीं अमेरिका में यह खपत 295 है।

  इसी प्रकार मधुमक्खी पालन से किसानों को शहद तो प्राप्त होता ही है साथ ही इससे मोम भी प्राप्त होता है। वैसे तो मधुमक्खी पालन व्यवसाय भारत में प्राचीनकाल से चला आ रहा है लेकिन फिर भी यहां शहद एवं मोम का उत्पादन अन्य देशों की तुलना में काफी कम है। कुक्कुट एवं मधुमक्खी पालन का भविष्य वृहद् है अगर गांव की युवा शक्ति इसे चुनौती मानकर तथा रखरखाव का वैज्ञानिक तरीका अपना कर बतौर रोजगार के रूप में अपनाये तो इससे घर बैठे आकर्षक आमदानी कमायी जा सकती है। फिर इस नेक कार्य के लिए तो वित्तीय संस्थाएं भी ऋण देने के लिए सदैव ही तैयार रहती हैं।

- **वनौषधि में व्यवसाय –** बदलते परिवेश के साथ औषधियों का निर्यात काफी बढ़ रहा है। आज चीन जैसा राष्ट्र वन औषधियों को बेचकर विश्व में अग्रणीय निर्यातक बन गया है। जबकि भारत में औषधीय पौधों की सर्वाधिक विविधता होने के बावजूद हम चीन से काफी पिछड़े हुए हैं। आज देश में बहुत–सी संस्थाएं (डाबर, हिमालय, झंडू वैद्यनाथ, हिमानी) इन औषधीय पौधों व उससे प्राप्त उत्पादों को खरीदने के लिए तत्पर हैं। इसमें सफेद मूसली, मुश्कदाना, अश्वगंधा, सोनामुखी, कलिहारी, सिनकाना, कुनैन, ईसबगोल, तुलसी, कालमेघ, कमलगट्टा, लेमनग्रास, सतावर सदाबहार, घृतकुमारी आदि सुगन्धीय पौधों को बड़े पैमाने पर लगाकर प्रति एकड़ कम से कम एक लाख रुपये की आय प्राप्त की जा सकती है। इसके अतिरिक्त इन औषधीय पौधों को विदेशों में भी निर्यात किया जा सकता है।

- **बागवानी से जुड़ा व्यवसाय –** फलों व सब्जियों के अतिरिक्त फूलों की खेती वर्तमान में एक अच्छा रोजगार माना जाता है। इस क्रम में गुलाब, गेंदा, रजनीगंधा, बेला, मोगरा,

ग्लेडियोलाई विभिन्न प्रकार के मौसमी पौधों तथा सजावटी कैक्टस, क्रोटन तथा बोनसाई वाले पौधों का व्यावसायिक उत्पादन काफी लाभप्रद माना जाता है। इस संबंध में अच्छे सरकारी संस्थानों जैसे आईआईएचआर बंगलौर, आईएआरआई नई दिल्ली से अच्छी प्रजातियों का बीज अथवा पौध प्राप्त कर नर्सरी बनाने का धंधा निःसंदेह ग्रामीण युवाओं के लिए एक वरदान सिद्ध हो सकता है।

सरकार की एक योजना राष्ट्रीय बागवानी मिशन है इसमें नए बागों की स्थापना, पुराने बागों का जीर्णोद्धार, मसाले तथा सुगन्धित पौधों की खेती, नारियल, चाय, काजू आदि तटवर्ती बागवानी, सिंचाई हेतु टैंक फॉर्म, पौंड निर्माण स्प्रिंकल आदि पर भारत सरकार या प्रदेश सरकार द्वारा 50 से 75 प्रतिशत तक अनुदान दिया जाता है।

- **लेमन घास एवं मेंथा (जापानी पुदीना)–** इनसे निकले तेल की मांग अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में बढ़ी है। लेमन घास की खेती में एक एकड़ में तीन साल में क्रमशः 40 हजार, 35 हजार तथा 30 हजार रुपये खर्च करने पर क्रमशः 80 हजार, 70 हजार, 75 हजार रुपये का तेल निकाला जा सकता है। किसान पापुलर की खेती कर सकते हैं, जिसको दियासलाई बनाने वाली कम्पनियां, किसानों से अनुबंध कराकर खेती का खर्च भी देती हैं और कुछ वर्षों बाद सारी पापुलर की लकड़ी खरीदकर ले जाती हैं। एक एकड़ जमीन में किसानों को लगभग 4.5 लाख रुपये प्राप्त होते हैं। इस प्रकार किसान खेतों में तथा खेतों की मेड़ों पर सफेदे के वृक्षों को लगा सकते हैं। यह पेड़ 5–7 वर्ष में तैयार हो जाता है। और अच्छी कीमत पर बिक जाता है।
- **मत्स्य पालन–** भारत में परम्परागत जलकृषि तथा मात्स्यिकीय उद्यम का सीधा संबंध सदा से गांव के गरीब, अशिक्षित, कुपोषण से पीड़ित तथा आर्थिक रूप से पिछड़े हुए मछुआरों के समुदाय से रहा है। भारतीय अर्थव्यवस्था में मत्स्य उद्योग को एक लघु उद्योग के रूप में विशेष स्थान प्राप्त है जिसमें रोजगार की अपार संभावनाएं हैं। ग्रामीण विकास में मत्स्य पालन की महत्वपूर्ण भूमिका है, मत्स्य पालन के रूप में रोजगार, आय में वृद्धि एवं खाद्य समस्या का समाधान का स्तर बढ़ाने के साथ ही विदेशी मुद्रा का अर्जन करने में सहायक है। मत्स्य उद्योग एक ऐसा उद्योग है जिसे निर्धन से निर्धन व्यक्ति आसानी से अपना सकता है, एवं अच्छी आय प्राप्त कर सकता है। समाज में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाया जा सकता है। अतः ग्रामीण क्षेत्रों में मत्स्य पालन जैसे लघु उद्योग को प्रोत्साहन देना होगा ताकि ग्रामीण निर्धनों का आर्थिक एवं सामाजिक स्तर सुधारा जा सके।

- **मत्स्य पालन सह आय के अन्य स्त्रोत–** इस उद्योग के साथ–साथ सहायक उद्योग भी हैं जो इसके साथ–साथ कर सकते हैं। इनमें लागत कम आती है तथा लाभ अधिक प्राप्त होता है। मछली पालन के साथ–साथ अन्य उत्पादक जीवों का पालन किया जा सकता है जिससे मत्स्य उत्पादन में होने वाले व्यय की पूर्ति की जा सके तथा अन्य जीवों के उत्सर्जित व्यर्थ पदार्थों का उपयोग मत्स्य पालन के लिए किया जा सके। वर्तमान में मत्स्य पालन के साथ सुअर, बत्तख, मुर्गीपालन करना काफी लाभप्रद साबित हुआ है। मत्स्य पालन के साथ अन्य जो उद्योग किये जा सकते हैं उनमें से कुछ इस प्रकार हैं–

  1. मत्स्य पालन सह धान उत्पादन,
  2. मत्स्य पालन सह सिंघाड़ा उत्पादन,
  3. मत्स्य पालन सह मुर्गीपालन,
  4. मत्स्य पालन सह बत्तख पालन,
  5. मत्स्य पालन सह झींगा पालन,
  6. मत्स्य पालन सह सुअर पालन इत्यादि ।

खादी पर आधारित उद्यमों का विकास

लोगों के आर्थिक स्तर को ऊँचा उठाने के लिए तथा उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए खादी पर आधारित उद्यमों को विकसित करके उत्साहवर्धक परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं। आजादी की लड़ाई के समय भी खादी सहित कई लघु उद्यमों को विकसित करने के पीछे भी आत्मनिर्भर बनाने की सोच थी। खादी एवं ग्रामोद्योग क्षेत्र में रोजगार की अपार सम्भावनाएं व अवसर हैं क्योंकि इसका कार्यक्षेत्र बहुत विस्तृत है। खादी एवं ग्रामोद्योग पर आधारित उद्यमों को मुख्य रूप से सात वर्गों में बांटा जा सकता है। ये वर्ग निम्नलिखित हैं–

(1) खनिज आधारित उद्यम,

(2) वन आधारित उद्यम,

(3) कृषि व खाद्य आधारित उद्यम,

(4) बहुलक व रसायन आधारित उद्यम,

(5) अभियांत्रिकी या इंजीनियरिंग व गैर परम्परागत ऊर्जा आधारित उद्यम,

(6) गैर परम्परागत ऊर्जा आधारित उद्यम एवं

(7) वस्त्र एवं सेवा आधारित उद्यम ।

I. **खनिज आधारित उद्यम** – खनिज आधारित उद्यम में रोजगार के बहुत अवसर पैदा किए जा सकते हैं। इनमें स्लेट, पैन्सिल, प्लास्टर ऑफ पेरिस, बर्तन धोने का पाउडर, गुलाल व रंगोली, चूड़ियां व कांच के खिलौने बनाने से संबंधित उद्यम आते हैं। इसके अतिरिक्त कुम्हारी उद्यम, पत्थर की कटाई, पिसाई, नक्काशी, कृत्रिम सामग्रियों से आभूषण बनाना, सजावटी शीशे की कटाई, डिजाइनिंग व पोलिशिंग से जुड़े उद्यम खनिज आधारित उद्यम हैं।

II. **वन आधारित उद्यम** – वन आधारित उद्यमों का क्षेत्र बहुत विस्तृत है जिसमें रोजगार की बहुत सी सम्भावनाएं हैं। इन उद्योगों में हाथ से कागज का निर्माण, कागज के प्यालों, झोलों व डिब्बों का निर्माण, जिल्दसाजी तथा लिफाफे बनाने का काम आदि प्रमुख हैं। इनके अतिरिक्त कत्था निर्माण, गोंद व रेसिन निर्माण, लाख निर्माण, दियासलाई एवं अगरबत्ती का निर्माण, टाट व झाड़ू का निर्माण, वनोत्पादकों का संग्रह, प्रशोधन व पैकिंग और रेशा उद्यम के अन्तर्गत जूट उत्पादों का निर्माण भी वन आधारित उद्यम हैं।

III. **कृषि व खाद्य आधारित उद्यम** – कृषि व खाद्य आधारित उद्यम भी रोजगार के बहुत से अवसर उपलब्ध करा सकता है। इनमें ताड़गुड़ निर्माण, ताड उत्पाद उद्यम, गन्ना गुड़ उद्यम, खाण्डसारी निर्माण, दलिया निर्माण, अचार व फल–सब्जी का प्रशोधन, दुग्ध उत्पाद निर्माण, दाल, मसालें, चटाई बनाना, दोना बनाना आदि कृषि व खाद्य आधारित उद्यमों में आते हैं।

IV. **बहुलक व रसायन आधारित उद्यम** – बहुलक व रासायन आधारित उद्यम भी रोजगार के अवसर जुटाने में विशेष योगदान दे सकते हैं। इस श्रेणी में साबुन उद्यम, मोमबत्ती का निर्माण, बिन्दी निर्माण, मेंहंदी निर्माण, चर्म व हाथीदांत से सींग व हड्डी उत्पाद जैसे उद्यम बहुलक व रासायन आधारित उद्यम हैं।

V. **अभियांत्रिकी या इंजीनियरिंग व गैर परम्परागत ऊर्जा आधारित उद्यम–** अभियांत्रिकी या इंजीनियरिंग व गैर परम्परागत ऊर्जा आधारित उद्यमों में भी रोजगार की बहुत सम्भावनाएं हैं। इस श्रेणी के उद्यमों की सूची काफी लंबी है। बढ़ईगिरी, केंचुआ पालन, सजावटी बोतलों व गिलासों का निर्माण मोटर वाईडिंग, तार की जाली बनाना, कलात्मक फर्नीचर, हाथगाड़ी, बैलगाडी, पीतल व तांबे के बर्तनों का निर्माण आदि।

VI. **वस्त्र उद्यम –** इस क्षेत्र में लोकवस्त्र का निर्माण, सिलाई करना, सिली–सिलाई पोशाक तैयार करना, खिलौने व गुड़िया आदि बनाना, धागे का गोला, ऊन का गोला, कढ़ाई करना आदि सारे काम वस्त्र उद्यम से संबंधित उद्यम हैं।

VII. **सेवा आधारित उद्यम–** खादी एवं ग्रामोद्योग क्षेत्र में सेवा आधारित उद्यमों में भी रोजगार के अच्छे अवसर पैदा किए जा सकते हैं। धुलाई, नलसाजी, बिजली की वायरिंग, घरेलू इलैक्ट्रिक उपकरणों की मरम्मत, चित्रकारी जैसे काम सेवा आधारित काम हैं।

निष्कर्ष

हम सभी एकमत होंगे कि सफलता के लिए उद्यमी को बहुत रचनात्मक होना पड़ता है। व्यापार या उद्यम संबंधी विचार बाजार में दिखाई देने वाले अवसर से उत्पन्न होता है। दूसरे शब्दों में, व्यापार विषयक किसी भी उत्पाद या सेवा के लिए वास्तविक मांग से उत्पन्न होता है। एक उद्यमी को अवसरों की तलाश करने और व्यावसायिक विचारों को उत्पन्न करने के लिए उत्सुक और खुले दिमाग का होना चाहिए। उद्यमी के मस्तिष्क में किसी उद्यम की स्थापना का विचार उत्पन्न होने पर वह उसकी व्यापक तौर पर जांच एवं अन्वेषण करता है जिससे यह समझा जा सकता सके कि विचार को क्रियान्वित किया जा सकता है या नहीं। यदि किया जा सकता है तो फिर उद्यमी उसकी स्थापना करने का प्रयत्न करता है। उद्यम की स्थापना के लिये भूमि, यंत्र, कच्चा माल, सामग्री व श्रम शक्ति को एकत्रित करके उद्यम के आकार के अनुसार वित्त की व्यवस्था एवं संसाधनों का एकत्रीकरण करना होता है।

उद्यमिता मात्र यान्त्रिक साधनों एवं तकनीकी सुविधाओं के प्रयोग का परिणाम नहीं है। उद्यमिता की सफलता के लिए प्राकृतिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा प्रशासनिक अनुकूलताओं का होना अति आवश्यक है। ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न विशिष्टताओं के कारण उद्यमिता की प्रक्रिया में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन समस्याओं को दूर किए बिना देश में उद्यमिता को गति प्रदान करना कठिन होता है।

पिछड़े क्षेत्रों में कृषि क्षेत्र की प्रधानता होती है। जनसंख्या की वृद्धि दर अपेक्षा से अधिक होती है। पर्याप्त प्राकृतिक साधन होने के बावजूद भी उनका पूर्ण विदोहन नहीं हो पाता है। प्रति व्यक्ति आय बहुत कम होती है। लोगों का जीवन स्तर बहुत नीचा होता है जिसका स्वास्थ्य एवं कार्यक्षमता पर बुरा प्रभाव पड़ता है। विस्तृत विनियोग क्षेत्र के बाद भी पूंजी निर्माण की दर बहुत नीची होती है। जनता की उपभोग प्रवृत्ति बचत प्रवृत्ति से कहीं ज्यादा होती है। समाज में छिपी हुई बेरोजगारी विद्यमान रहती है। ऐसे समाज में कृषि के लिए पुरानी तकनीक का प्रयोग किया जाता है। इन क्षेत्रों में उद्योग, व्यापार तथा यातायात

तकनीकी दृष्टि से पिछड़ी हुई अवस्था में होते हैं। इसी कारण ग्रामीण आर्थिक विकास में उद्यमिता का बहुत अधिक महत्व है। वैसे भी उद्यमिता समय की मांग है जिसे पूरा किए बिना प्रगति की दौड़ में आगे बढ़ना असम्भव है। ग्रामीण क्षेत्र में कृषि एवं खादी आधारित उद्यमिता के विकास की पर्याप्त संभावनाएँ हैं, केवल उनका विदोहन किया जाना है। समय की माँग है कि हम उनका विदोहन करें और विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ें।

सन्दर्भ :

1. *आदित्य (2017), कृषि और उद्यमिता, बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर (भागलपुर), बिहार*
2. *ओझा, रुरल इंटरप्रेन्योरशिप इन इंडिया, ग्लोबल विजन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली*
3. *दुबे, विजय एवं दुबे,ममता (2015), भारत में उद्यमिता विकास, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली*
4. *पन्त, डी. सी। (2009), भारत में ग्रामीण विकास, त्रिपोलिया कॉलेज बुक डिपो, जयपुर*
5. *मिश्र, कालराज (2009), भारत में उद्यमिता, प्रभात प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली*
6. *हरकुट, ओ. पी. एवं वैष्णव, जी. पी. (2015), उद्यमिता, विकास हैंड बुक, साइंटिफिक पब्लिशर्स (इंडिया), जोधपुर*

7- *www.ediindia.org*

8- *www.entrepreneurindia.co*

9- *www.rural.gov.in*